RESEARCH COMMUNICATIONS
(An International Open Access, Peer Reviewed, Multidisciplinary Online Journal)
https://research-communications.cmpcollege.ac.in
C. M. P. DEGREE COLLEGE
(A Constituent P.G. College, University of Allahabad)

Volume-3, Issue-2, July-December 2025, pp 120-125 ISSN: 2584-1270
DOI: doi.org/10.65719/RC.3.2.2025.120

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के चिंतन के मूल तत्व

अरुण कुमार वर्मा

सहायक आचार्य, राजनीति विज्ञान विभाग
सी0एम0पी0 डिग्री कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश।
ई-मेल: *draruncmp1981@gmail.com*

सारांश

भारतीय राजनीतिक चिन्तन की परम्परा में कई मनीषी विचारक और दार्शनिक हुएहैं जिन्होंने भारतीय समाज और राजनीति के पुनर्निर्माण के लिए ऐसे विभिन्न विचारों का प्रतिपादन किया, जिनके आधार पर भारतीय राजनीति और समाज को एक नई दिशा दी जा सकती हैऔर जो विशुद्ध रुप से भारतीयता के समग्र विचार पर आधारित हो। पं0 दीन दयाल उपाध्याय एक ऐसे ही विचारक थे जिन्होने भारतीय राजनीति के आदर्श स्वरुप की स्थापना के लिए एक वैचारिक आधारशिला रखी, जिसे एकात्म मानववाद कहा जाता है। एकात्म मानववाद का विचार उनके समस्त सामाजिक और राजनीतिक चिन्तन का आधार है, उनका एकात्म मानववाद का विचार अत्यंत व्यापक विचार है जिसमें सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड का सार निहित है। पं0 दीन दयाल उपाध्याय ने भारतीय राजनीति और समाज के पुनर्निमाण के एकात्म मानववाद का विचार दिया जिसमें कई तत्व शामिल हैं जो एक आदर्श समाज की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करते हैं। उन्होने भारतीय राजनीति में सक्रिय रुप से भाग लिया और भारतीय राजनीति में व्याप्त समस्याओं के समाधान के लिए विभिन्न विचारों का प्रतिपादन किया जो आज के वर्तमान समाज में बहुत ही प्रासंगिक है क्योंकि वे सभी सर्वसमावेशी समाज और राजनीति के विचार पर आधारित हैं। वे कहते थे कि मानववाद ही इस संसार का मूल तत्व है क्योंकि विश्व की सभी व्यवस्थाएं मानवीय कल्याण के लिए ही हैं और मानव हितों की रक्षा ही उनका अन्तिम ध्येय है, इसलिए मानवता के कल्याण के लिए सभी सस्थाओं में समन्वय एवं समग्रता होनी चाहिए, जिसमें स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्पूर्ण व्यवस्था से मनुष्य का सामंजस्य और समन्वय हो और जिसके मूल में मानव हो।

मूल शब्द- *पं0 दीन दयाल उपाध्याय, एकात्म मानववाद, समाजवाद, पूंजीवाद, अंत्योदय, स्वदेशी, मानवतावाद, लोकतंत्र।*

प्रस्तावना

भारत सांस्कृतिक विविधताओं वाला देश है, जिसमें विभिन्न संस्कृति, जाति, धर्म, विचारधारा को मानने वाले लोग रहते हैं। हमारे धर्म, संस्कृति, विचार, संस्कार, रहन-सहन एवं वैचारिक विविधताओं के बावजूद हमारा समाज एकता की भावना पर आधारित हैं, और यही अनेकता में एकता की भावना भारत की पहचान और शक्ति भी है। प्राचीन काल से ही भारतीय समाज का आधार मानववादी चिन्तन रहा है क्योंकि भारतीय संस्कृति उपभोगवादी नही थी। भारतीय संस्कृति प्राचीन काल से ही बहुत सम्बृद्ध रही है और भारतीय समाज के सुदृढ़ आधार रही है, हमारी प्राचीन शासन व्यवस्था का आधार भी यही भारतीय संस्कृति और विचार रहे हैं। यही कारण है कि इसी आधार पर हम बसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को स्वीकारते हुए सारी मानव जाति को एक परिवार का अंग मानते हैं। भारतीय इतिहास के उस कालखण्ड में जब देश पर विदेशी शासन रहा तो उस समय भारतीय विचार, पहचान तथा मूल्यों का नष्ट करने का प्रयास किया गया और धीरे-धीरे हम अपनी सांस्कृतिक

विरासत से विमुख होते चल गये, जबकि सदियों से हमारी संस्कृति हमारी पहचान और प्रगति का आधार रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात जिस तरह हमने पाश्चात्य सामाजिक, आर्थिक और राजनीति विचारों और मूल्यों को महत्व देकर भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार बनाने का प्रयास किया है यह निश्चित रुप से न केवल अतार्किक है वरन दुर्भाग्यपूर्ण भी है। आज हमने पश्चिमी मूल्यों और विचारधाराओं का भारत की उन्नति का मानक बनाया है और इसी के आधार पर भारतीय समाज की प्रगति का मूल्यांकन भी करते हैं यह वास्तव में तर्कसंगत नही है। पं0 दीन दयाल उपाध्याय कहते हैं कि जिन व्यक्तिवाद, उदारवाद, समाजवाद, साम्यवाद, पूंजीवाद जैसी तमाम विचारधाराओं के आधार पर हम भारतीय समाज की समस्याओं का समाधान करने का प्रयास कर रहे हैं या मूल्यांकन करने का प्रयास करते हैं वे भारतीय विचारधाराऐं नहीं हैं, जिन्होने भारतीय समाज में न केवल तमाम विकृतियों को जन्म दिया है बल्कि हमें भ्रमित भी किया है।[1]

पं0 दीन दयाल उपाध्याय ऐसे व्यक्ति थे जिन्होने भारतीय संस्कृति के महत्व को पहचाना और उसके महत्व को स्थापित करने के लिए एकात्म मानववाद, स्वदेशी, समग्र अखण्डता, अन्योदय जैसे विचारों का प्रबल समर्थन किया और पाश्चात्य विचारों का प्रबल विरोध किया। उनका यह मानना था कि भारतीय समस्याओं का समाधान पाश्चात्य राजनीतिक पद्धति से नही हो सकता क्योंकि भारतीय समाज और उसकी समस्याऐं अलग हैं, स्वतंत्रता के पश्चात हमने उन सैद्धान्तिक आधारों को चुना जो भारतीय समाज के लिए प्रांसगिक नही थे। आज की पूजीवादी व्यवस्था समाज में तमाम समस्याओं को जन्म देती है और फिर हम आर्थिक समानता की स्थापना के लिए समाजवाद जैसे छद्दम् सिद्धान्त का सहारा लेते हैं, जबकि समाजवाद में भी प्रभाव केवल आर्थिक रुप से सम्पन्न व्यक्तियों का हीरहता है इसलिए समाजवादी सिद्धान्त भी समाज से विषमता को समाप्त करने के बजाय पूंजीवादी व्यवस्था का ही समर्थन करती है। वे भारतीय अर्थव्यवस्था को भारत की आवश्यकताओं और समस्याओं के अनुसार स्थापित करने और संचालित करने पर बल देते थे इसीलिए वे स्वदेशी बाजार व्यवस्था पर बल देते थे अर्थात भारत की सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था स्वदेशी आवश्यकताओं पर तथा सिद्धान्तों पर आधारित होना चाहिए।

एकात्म मानववाद का विचार

पं0 दीन दयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद का विचार उनके विचारों का केन्द्रबिन्दु है जिसके चारों ओर अन्य सभी विचार हैं। एकात्म मानववाद का विचार एक कालजयी विचार है, ऐसे समय में जब भारतीय जनमानस धर्म, जाति, पंथ, विचारधारा और क्षेत्र के आधार पर विखण्डित है तो उनका एकात्म मानववाद का विचार की सबसे प्रासंगिक प्रतीत होता है जिसके आधार पर भारतीय समाज का पुनर्निर्माण एवं एकीकृत किया जा सकता है। भारतीय सामाजिक व्यवस्था का आधार भारतीय विचार एवं संस्कृति है जिनका आधार समष्टिवाद है, अर्थात जो जड़ और चेतन के समन्वय और अन्तर्निभरता के विचार पर आधारित है। भारतीय संस्कृति मानव समाज को जोडने वाली रही हैं, लेकिन आज पाश्चात्य विचारधाराओं ने हमारे समाज विभिन्न समूहों में बांट दिया है आज विचारधारा ही मुख्यतः टकराव का कारण है और किसी भी प्रकार के टकराव में अन्ततः पीडित मानव ही होता है। वैचारिक आधार पर मानव कल्याण की कल्पना करना दिखावा मात्र होता है क्योंकि इतिहास गवाह है कि वैचारिक टकराव केवल समाज को विखण्डन एवं विनाश की ओर ले जाता है। ऐसे समय में जब हम सब अपनी विचारधारा की श्रेष्ठता स्थापित कर अपने निजी स्वार्थ को साधने में लगे हैं, तो ऐसे में पं0 दीन दयाल उपाध्याय का दर्शन बहुत ही सार्थक प्रतीत होता है। वैचारिक टकराव एवं विचारधाराओं को विफल होते देख पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी के मन में यह प्रश्न उठा कि इस वैचारिक अन्धकार में सम्पूर्ण भारत को कोई मार्ग दिखा सकता है क्या? इसी प्रश्न पर चिन्तन करते हुए उन्होने एकात्म मानववाद जैसे कालजयी सिद्धांत का प्रतिपादन किया। जीवन एवं प्रकृति के समस्त रुपों को अपने में समाहित करने वाली यह एक एसी विचारधारा, जो प्रत्येक कालखण्ड की सभी समस्याओं के व्यावहारिक समाधान हेतु प्रांसगिक सिद्ध हुई है। इसमें समग्र सृष्टि का विचार है। यह एक ऐसा विचार है, जिसमें जीवन का समग्रता का चिंतन किया गया है। उसके साथ ही जीवन के विकास का प्रबन्ध भी किया गया है। सम्पूर्ण मानवता ही एकात्म मानववाद का केन्द्र है। इसके विषय में उन्होने कहा कि मानव केवल न केवल व्यक्ति है, मानव न केवल समाज है, वरन् मानव व्यक्ति और समाज की एकात्मता से पैदा होता है। व्यक्ति और समाज को बांट दें तो मानव मर जायेगा। वह अस्तित्व में ही नही रहेगा क्योंकि मानव का अस्तित्व समग्रता से ही है अर्थातव्यष्टि और समष्टि एक एकात्म इकाई है।

इस एकात्म इकाई का नाम मानव है और इसलिए यदि मानव को सुखीकरना है तो हम व्यक्तिवादी होकर नही कर सकते हैं क्योंकि व्यक्तिवादी समाज की उपेक्षा करते हैं तथा समाजवादी होकर भी नही कर सकते क्योंकि समाजवाद व्यक्ति के व्यक्तित्व को ही कुचल देते हैं। ऐसे समय में एकात्म मानवतावाद का विचार सारे समाज को मानववाद की आधार पर एकता के सूत्र में पिरोने का कार्य कर करता है। वे कहते थे यदि हमारे सिद्धान्त गलत होंगे तो समाज में न केवल विकृतियां आयेंगी बल्कि समाज की मूलभूत समस्याओं का समाधान भी हम नही कर पायेगे, शायद इसीलिए वे पाश्चात्य विचारों का पुरजोर विरोध करते थे।[2]

भारतीय संस्कृति पर बल

भारत की एकता और अखण्डता की स्थापना कैसे की जाए इसके लिए पं0 दीन दयाल उपाध्याय चिन्तित थे, वे देश की उन सभी प्रवृत्तियों को रोकना चाहते थे जो विभिन्न वादों (ism) के आधार पर भारतीय समाज को विभाजित करते थे। वे कहते थे कि मानव को सिर्फ मानव मानकर उसके साथ व्यवहार किया जाए क्योंकि उनका मानना था कि प्रत्येक मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा से एक ही प्राणी होता है और भारतीय संस्कृति इस तथ्य को प्रमाणित करती है। वर्तमान समय में सम्पूर्ण मानव समाज जिस तरह जाति, धर्म, सम्प्रदाय एवं वैचारिक आधार पर बंटा होने के कारण तमाम प्रकार की समस्याओं का सामना कर रहा है उसका एक मात्र समाधान एकात्म मानववाद की अवधारणा है। भारतीय संस्कृति की मुख्य विशेषता यह है कि वह सम्पूर्ण जीवन का, सम्पूर्ण सृष्टि का संकलित विचार करती है। उसका दृष्टिकोण एकात्मवादी है। उन्होने कहा स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात हमने पाश्चात्य संस्कृति को आदर्श मानकर अपनाया था लेकिन अब यह स्पष्ट हो गया है कि पाश्चात्य संस्कृति न केवल भारतीय संस्कृति को विकृत कर दिया है बल्कि तमाम प्रकार समस्याओं को भी जन्म दिया है। प्रत्येक देश की अपनी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिस्थितियां होती हैं इसलिए पाश्चात्य संस्कृति किसी भी तरह से भारतीय संस्कृति और संस्कारों के अनुरुप नही है इसलिए हमें उसका परित्याग करना चाहिए। विभिन्न मूल्यों और विचारों में एकता स्थापित करना ही भारतीय संस्कृति की विशेषता है।

उन्होने कहा प्रत्येक राष्ट्र या समाज की एक आत्मा होती है जो उसे अन्य समाजों से अलग करती है और उसकी पहचान निर्धारित करती है जिसे उन्होने 'चिति' कहा। अर्थात हमारे आन्तिरिक भाव, आन्तिरिक संस्कार, हमारा इतिहास तथा हमारे सामाजिक मूल्य हमारी चिति का निर्माण करते हैं। सभी राष्ट्रों की अपनी चिति होती है जोकि सभी राष्ट्रों को विशिष्ट बनाती है। उनका मानना था कि संस्कृति राष्ट्र का शरीर, चिति उसकी आत्मा तथा विराट उसका प्राण होता है। उन्होने राज्यऔर राष्ट्र में अन्तर करते हुए कहा कि राज्य कभी भी राष्ट्र से सर्वोच्च नही हो सकता क्योकि जब राज्य, राष्ट्र से शक्तिशाली हो जाएगा तो समाज में विकृतियां आ जायेंगी। उन्होने कहा कि शरीर, प्राण, बुद्धि और आत्मा का समन्वय ही एकात्मकता है, अर्थात जिस मनुष्य मे ये चारों तत्वों का समन्वय विद्यमान है एकात्म मानव कहा जा सकता है। और उस मानव का समाज के विभिन्न अंगों तथा पर्यावरण के मानव का सामन्जस्य होना चाहिए तब एकात्म मानववाद की अवधारणा स्थापित होती है। एकात्म मानववाद के दो आयाम हैं, पहला यह एक जीवन दर्शन है और दूसरा यह भारतीय संस्कृति से सम्बन्धित दर्शन है। मानववाद वास्तव में पाश्चात्य दर्शन है वहीं एकात्म मानववाद भारतीय दर्शन है जो मानव और समाज में समन्वय की बात करता है।[3]

पं0 दीन दयाल उपाध्याय ने भारतीय राजनीति में भी सक्रिय रुप से भाग लिया। उनके राजनीतिक विचार बहुत ही स्पष्ट थे वे कहते थे कि वोट बैंक की राजनीति ने देश को विखण्डित कर दिया है, राष्ट्रहित सर्वोपरि होता है हमें किसी भी स्थिति में राष्ट्र की अखण्डता से समझौता नही करना चाहिए। राजनीतिक दल केवल सत्ता पर पर अधिकार करने वाले लोगों का झुंड नही वरन् एक जीवन्त संगठन होते हैं जिन पर समाज को एक सही दिशा देने का दायित्व होता है परन्तु वे स्वयं सत्ता प्राप्ति के लिए जातिवाद, बाहुबल, धनबल तथा साम्प्रदायिकता को बढ़ाने का कार्य करते हैं।[4]

सर्वसमावेशी राजनीति पर बल

पं0 दीन दयाल उपाध्याय कहते थे कि राजनीति का उद्देश्य स्वार्थ पूर्ति एवं सत्ता सुख नही बल्कि राष्ट्र साधना है जिसके लिए त्याग और वैचारिक अनुशासन आवश्यक है, उपाध्याय जी के जीवन और विचारों से आज के राजनेताओं को सीख लेना

चाहिए। वे चुनाव में किसी प्रकार के वाद का प्रबल विरोध करते थे चाहे जातिवाद हो, क्षेत्रवाद हो या संप्रदायवाद हो, क्योंकि उनका मानना था कि बाहुबल और धनबल ने भारतीय राजनीति को विकृत कर दिया है। जो कि एक स्वस्थ लोकतंत्र का परिचायक नही है। वे राजनीति को मानव कल्याण का मार्ग मानते थे जिसका उद्देश्य समाज के सभी वर्गो का कल्याण करना है वे समाज को तोडने वाली राजनीति को प्रबल विरोध करते थे।

वे जनसंघ से जुडे तथा वर्ष 1967 में जनसंघ के अध्यक्ष निर्वाचित हुए, उनकी राजनीतिक दूरदर्शिता देखकर डॉ0 श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने कहा था कि यदि हमें दो दीन दयाल मिल जाएं तो मै भारतीय राजनीति का नक्शा ही बदल दूं। वे वर्ष1963 में जनसंघ के टिकट पर लोकसभा का चुनाव भी उत्तर प्रदेश के जौनपुर सीट से लडे थे परन्तु वे चुनाव हार गये, क्यांकि वे जातीय एवं धार्मिक ध्रुर्वीकरण के विरुद्ध थे और आदर्शवादी राजनीति करना चाहते थे। वे भारतीय राजनीति केपतन से बहुत चिन्तित थे तथा राजनीति की विकृतियों को दूर करना चाहते थे। वे कहते थे कि राजनीति साध्य नही अपितु साधन है, यह मार्ग है मंजिल नही। जिसका उद्देश्य मानव का कल्याण करना है, वे राजनीति का आध्यात्मीकरण करना चाहते थे। वे कहते थे कि जिस तरह के लोकतंत्र का प्रारुप हमने अपनाया है वह भारत के लिए कभी भी उपयोगी नही हो सकता। आज हम बडे गर्व से कहते हैं कि हमारा लोकतंत्र विश्व का सबसे वृहद और 75वर्ष प्राचीन है, परन्तु लोकतंत्र की प्राचीनता से कहीं अधिक महत्वपूर्ण उसकी गुणवत्ता है, अर्थात लोकतंत्र की प्राचीनता से उसका स्वास्थ्य और समाजोन्मुख होना अधिक आवश्यक है। हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था किस ओर जा रही है हमें इस तथ्य से भलीभांति परिचित होना होगा और उसके पतन का रोकने के लिए भारतीय मूल्यों के महत्व को स्वीकार करना होगा। वे सदैव चेतावनी देते थे कि हमे लोकतंत्र के पाश्चात्य मॉडल पर नही चलना है। क्योंकि सभ्यताऐं सार्वभौमिक नही होती, प्रत्येक सभ्यता या राष्ट्र की अपनी विशेषताऐं होती हैं इसलिए सभी सभ्यताओं के लिए शासन का केवल एक मार्ग नही हो सकता। हमने राजनीतिक स्वार्थों के कारण समाज को विकृत कर दिया है, जिसने समाज में विभिन्न प्रकार की विषमताओं और समस्याओं को पैदा किया है। जिसको लेकर पं0 दीन दयाल उपाध्याय अत्यंत चिंतित थे, वे भारतीय राजनीति को सर्वसमावेशी एवं सर्वस्पर्शी बनाना चाहते थे जिसमें समाज के सभी वर्गा को समान सम्मान और अवसर प्राप्त हो सके। दीन दयाल उपाध्याय के द्वारा बताये सिद्धान्त का यदि आज के राजनीतिज्ञ व्यावहारिक रुप से लागू करने का प्रयास करे तो वास्तव में हम एक आदर्श राजनीतिक व्यवस्था का निर्माण कर सकते हैं जो समाज के सभी पक्षों का सम्यक विकास किया जा सकता है। जिसके आधार पर समाज के अन्तिम पायदान पर खडे व्यक्ति का भी कल्याण किया जा सके। पं0दीन दयाल उपाध्याय का एकात्म मानववाद का विचार वर्तमान समाज में व्याप्त विषमताओं के विरुद्ध के एक ऐसा सिद्धान्त है जो मानव सम्मान एवं गरिमा को सुरक्षित रखते हुए मानवीय एकता पर बल देता है। एकात्म मानववाद के आधार पर उन्होंने एक प्रगतिशील विचारधारा का प्रतिपादन कर एक वैकल्पिक राजनीति की नींव रखी और अंत्योदय का मार्ग दिखाया जिसके द्वारा समाज के निर्धन, शोषित तथा वंचितों को समाज की मुख्यधारा में लाया जा सकता है।[5]

पं0 दीन दयाल उपाध्याय ने जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया वे भारतीय समाज के आधार हैं, और जिन पर भारतीय संविधान लागू होने से पूर्व भारतीय राजनीतिक व्यवस्था का संचालन भी होता रहा है, परन्तु यह विडम्बना ही है कि स्वतंत्रता के बाद हमने उन शासन विधानों को स्वीकार नही किया और एक पाश्चात्य शासन का मॉडल का अपने देश पर थोप दिया। पं0 दीन दयाल जी एक ऐसे राजनीतिक चिन्तक है जिन्होने कहा कि आज भारतीय समाज विभिन्न समस्याओं से ग्रसित हैजिसका मुख्य कारण हमारा पाश्चात्य संस्कृति का मोह है जिसने हमारी हमें हमारी जड़ों से दूर कर दिया है और सबसे महत्वपूर्ण बात कि हम इस सभी समस्याओं का समाधान पाश्चात्य पद्धतियों से करना चाहते हैं जिसका परिणाम हम आज के आधुनिक समाज में देख सकते हैं। सारा समाज विभिन्न वादों में विभाजित हो गया है चाहे वह जातिवाद हो, भाषावाद हो, क्षेत्रवाद हो या फिर पंथवाद हो, सारा समाज विखण्डित हो गया है। आज प्रतिदिन समाज असहिष्णुता और टकराव की सदैव स्थिति बनी रहती है और इन सभी समस्याओं के लिए हमारा वैचारिक पाश्चात्यीकरण भी एक महत्वपूर्ण कारण है। पं0 दीन दयाल उपाध्याय को भारतीयता बनाम पाश्चात्यता संस्कृति का बहुत अच्छा ज्ञान था, और उस पर उन्होने विस्तार से चर्चा की और बताया कि किस तरह भारतीय संस्कृति सम्पूर्ण विश्व में सबसे श्रेष्ठ है, उनका मानना था कि भारतीय संस्कृति एकीकृत के दर्शन पर आधारित है यह सारी मानव जाति को एक सूत्र में बांधने के लिए

प्रेरित करती है। भारतीय संस्कृति त्याग और जड़ और चेतन में संतुलन पर आधारित है। यह समस्त मानवीय सभ्यता को अपने में समाहित करने वाला कालजयी सिद्धान्त बसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का मार्ग प्रशस्त करता है।

अंत्योदय का विचार

पं0 दीन दयाल उपाध्याय एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था का समर्थन करते थे जो व्यक्ति और समाज दोनो को आर्थिक रुप से आत्मनिर्भर बनाये, इसीलिए उन्होने पूंजीवाद और समाजवाद की आलोचना करते हुए स्वदेशी, सहकारिता और अंत्योदय जैसे विचारों का प्रतिपादन किया। अंत्योदय का तात्पर्य है समाज के अन्तिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति का आर्थिक उत्थान।उनका मानना था कि भारत का उत्थान भारतीयता के दर्शन पर आधारित होना चाहिए, इसलिए वे पाश्चात्य विचारधाराओं को भारतीय समाज के लिए अप्रसांगिक मानते थे क्योंकि ये विचारधाराएं भौतिकवाद तथा उपभोगवाद पर आधारित हैं, वहीं भारतीय अर्थव्यवस्था का आधार स्वदेशी तथा अन्त्योदय का विचार है जिसका मूल लक्ष्य भौतिक लाभ नही बल्कि मानव कल्याण और मानवीय मूल्यों की रक्षा करना है। पं0 दीन दयाल उपाध्याय का कहना था कि अर्थव्यवस्था की प्रगति का मूल्यांकन मानव के सर्वांगीण विकास की कसौटी पर किया जाना चाहिए।[6]

पंडित दीन दयाल उपाध्याय का चिन्तन समग्रवादी दर्शन पर आधारित है, उनका एकात्म मानववाद का आधार अखण्डमंडलाकर का विचार है जिसके केन्द्र में मनुष्य और उसके चारों परिवार, समाज, राष्ट्र और अन्त में सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड समाहित है। उनका मानना था कि भारत का वसुधैव कुटुम्बकम् का दर्शन वैश्विक समग्रता का दर्शन है जो सम्पूर्ण विश्व को एक कटुम्ब की दृष्टि से देखता है, इसलिए उनका चिन्तन सार्वभौमिक था। उनका मानना था कि मनुष्य एकांगी नही अपितुबहुअंगी है, अर्थात उसके जीवन का अस्तित्व संसार की समस्त व्यवस्थाओं पर आश्रित है उसकी पहचान ही समग्रता है। सभी मनुष्यों, जीवों एवं सभ्यताओं के एकाकार ही एकात्म मानववाद की आधार है। समस्त मानव जाति तथा समाज में एकाकार ही सत्य, शिव एवं सुन्दर है। वे कहते थे कि व्यक्ति इस सारे संसार का मूल है व्यक्ति से परिवार, समाज, राष्ट्र तथा विश्व का निर्माण हुआ है इसलिए किसी भी व्यवस्था को मानव से पृथक नही किया जा सकता, मानव की सम्पूर्णता इस सभी व्यवस्थाओं के साथ है न कि इनसे पृथक। इसीलिए वे कहते थे कि व्यक्ति संसार की सभी व्यवस्थाओं का अभिन्न अंग होता है, इस व्यवस्था से मानव का अलगाव उसके पतन और कष्ट का कारण बनता है इसलिए मनुश्य को समाज की सभी व्यवस्थाओं के साथ समन्वय एवं सहयोग के साथ कार्य करना चाहिए।

पंडित दीन दयाल उपाध्याय भारत के पश्चिमीकरण का विरोध करते थे, कहते थे पश्चिमी देशों के पास कोई सम्यक् और सुस्पष्ट दर्शन का नितान्त अभाव है। भारतीय युवा पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण कर रहा है जबकि पाश्चात्य संस्कृति भोगवादी संस्कृति है, भारतीय संस्कृति नैतिकता और मुल्यों पर आधारित है जिसने सम्पूर्ण विश्व को मानवता के कल्याण का मार्ग दिखाया परन्तु आज हमारे देश के युवा उससे विमुख हो रहे हैं, जबकि पश्चिमी जगत भारतीय संस्कृति की ओर आकृषित हो रहा है। उन्होने कहा था कि आज भारत जिन मुश्किलों का सामना कर रहा है, उसका प्रमुख कारण इसकी राष्ट्रीय पहचान की उपेक्षा करना है, उन्होने कहा कि प्रत्येक राष्ट्र की अपने विशिश्ट पहचान होती है जिसका निर्माण उसकी संस्कृति, मूल्यों तथा ऐतिहासिक विरासत से होती है। विश्व स्तर पर भारत की पहचान उसकी अपनी संस्कृति से होती है और यही संस्कृति भारत की शक्ति है, इसे हमें संरक्षित करने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि हमारी संस्कृति न केवल हमारी पहचान अपितु हमारे अस्तित्व का आधार है।

पं0 दीन दयाल उपाध्याय जी ने आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए स्वदेशी का विचार दिया। उन्होने कहा कि स्वदेशी का विचार केवल आर्थिक विचार नही है बल्कि इसका अर्थ अत्यत व्यापक है जिसमें सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक जीवन पद्धति से भी सम्बन्धित है। उन्होने कहा कि स्वदेशी विचार और वस्तुऐं किसी भी समाज की स्थिरता और प्रगति का आधार होते है। उन्होने स्वदेशी को अन्योदय से जोड़कर कहा कि यदि हमारी आर्थिक व्यवस्था अंत्योदय युक्त होगी तो चिति की साधना सफल हो जायेगी। वे समाज के प्रत्येक व्यक्ति को समाज की मुख्य धारा में लाना चाहते थे जिसके लिए समग्र सामाजिक प्रयास करने पर बल देते थे।

आज सरकार सबकासाथ और सबका विकास की भावना पर कार्य कर रही है निसंदेह इस विचार में अंत्योदय की भावना निहित दिखाई देती है उनके अनुसार अंत्योदय शब्द में संवेदना, सहानुभूति, प्रेरणा, साधना और कर्तब्य प्रेरणा की भावना

निहित है। वे प्रत्येक कार्य के लिए मशीनों के प्रयोग से अत्यंत चिंतित थे, क्यांकि उनका मानना था कि मशीने व्यक्ति को अकर्मण्य बनाती हैं हमें मशीनों से मनुष्य को मुक्त करना होगा। आज मशीनो ने मनुष्य को अपना दास बना लिया है और मनुष्य को मशीन की इस दासता मुक्त कराना होगा।[7]

निष्कर्ष

पंडित दीन दयाल उपाध्याय के चिन्तन के केन्द्र में मानव कल्याण का प्रश्न है, जिसके लिए उनके चिन्तन में कई वैचारिक तत्व विद्यमान हैं, उनका सम्पूर्ण दर्शन अखण्ड भारत, धर्मराज्य, विकेन्द्रीकृत अर्थव्यवस्था, राष्ट्रवाद, व्यक्तिवाद, समष्टिवाद तथा एकात्मवाद आधार पर ऐसे भारतीय समाज का निर्माण पर आधारित है जिसके मूल में मानवीय गरिमा और उसका कल्याण हो, क्योंकि मानव से सम्पूर्ण समाज और व्यवस्थाएं होती हैं न कि समाज से व्यक्ति। इस प्रकार पं0 दीन दयाल उपाध्याय के विचार और चिंतन भारतीय समाज एवं राजनीति के पुनर्निर्माण के लिए प्रांसगिक एवं अत्यंत उपयोगी हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. उपाध्याय, दीन दयाल, इंटेग्रल हयूमनिज्म: एन एनालिसिस ऑफ सम बेसिक एलीमेंट, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2016।
2. राजनीति में भारतीयता के वाहक थे पंडित दीन दयाल उपाघ्याय, राकेश सिंह, लोकनीति केन्द्र, 25 सितम्बर 2020।
3. राव,पी मुरलीधर, पं0 दीन दयाल उपाध्याय, भारतीय जनता पार्टी, 2015, पृ0 55।
4. उपाध्याय, दीन दयाल, 'मताधिकार कागज का टुकड़ा नही, लोकाज्ञा है, पाच्चजन्य, 21 जनवरी 1962 (चुनाव विशेषांक, पृ 41)
5. श्रीवास्तव, डॉ0 मुकेश कुमार, पं0 दीन दयाल उपाध्याय के विचारों से सीख लेता भारत, नवभारत टाइम्स, 25 सितम्बर 2022।
6. झा0 प्रभात, दीन दयाल उपाघ्याय: स्वदेशी चिंतन के सबसे बडें प्रवर्तक,25 सितम्बर 2020।
7. दीन दयाल संसार, समाजवाद, लोकतंत्र और मानवतावाद, पाच्चजन्य 02 जनवरी 1961।